शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सूर साहित्य में ग्रामीण जीवन

डॉ वारिश जैन
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य में भक्ति काल को स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में रचित साहित्य ने भारतीय हृदय का जिस प्रकार स्पर्श किया, वह अद्भुत है। मध्यकाल में भारत राष्ट्रीयता की वर्तमान संकल्पना से बहुत दूर था, फिर भी संत साहित्य ने सांस्कृतिक दृष्टि से भारत में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया । भक्त शिरोमणि सूरदास जी ने अपने साहित्य में ग्राम्य जीवन का तन्मयता से चित्रण किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

साहित्य मे वैदिक काल से ही ग्रामीण जीवन का चित्रण होता आया है। वेदों में कृषि से सम्बंधित अनेक ऋचाएँ मिलती हैं। ग्राम्य जीवन की मुख्य धुरी गोवंश की अनेक प्रकार से स्तुति की गई है। वैदिक कालीन जितने भी देवता थे वे प्रमुखतः प्रकृति व ग्रामीण जीवन को सीधे सीधे प्रभावित करते थे। वेदो मे कहा गया है - 'गौमये वसते लक्ष्मी'। इसके अतिरिक्त वृषभ (बैल) जो हमारे कृषक जीवन का केन्द्र बिन्दु है व ह वैदिक संस्कृति का मूलदेवता रहा। गोपालन एंव कृषि साहित्य मे बहुतायत से चित्रित हुआ है। साहित्य में ही घोष वाक्य है - 'अन्नम् बहु कुर्वीत तद् व्रतम'। अर्थात हमें अधिक अन्न उपजाने का व्रत लेना चाहिए । वेद, उपनिषद, आरण्यक ग्रन्थ, ब्राह्मण ग्रन्थ, पुराण आदि में ग्रामीण संस्कृति का ही चित्रण मिलता है । महाकवि कालिदास के साहित्य में ग्रामीण जीवन सरसता एंव सजीवता के साथ चित्रित हुआ है। उन्होंने अपने 'रघुवंश' के आरंभ मे राजा दिलीप को नंदनी के साथ वन-वन फिराकर इसी मधुर जीवन का आभास दिलाया है।

आदिकाल में अपभ्रं श, सिद्ध , रासो एवं जैन साहित्य में भी ग्रामीण जीवन के अं श बहुतायत से खोजे जा सकते हैं। मध्यकाल में भक्ति और रीति दोनों प्रकार के साहित्य में ग्रामीण जीवन का विषद चित्रण हुआ है। कृष्ण भक्ति शाखा में कृष्ण की लीलाओं के चित्रण के लिए तो प्रकृति का विस्तृत एवं खुला परिवेष चुना गया , जिसमें ग्रामीण जीवन के भरपूर दर्शन हुए। विशेष तौर से सूरदास ने तो ग्रामीण जीवन के मधुर रस से सींचकर ही सूरसागर की रचना की। उन्होंने यनुना तट , निकुंज, वंशीवट, गोचारण, वन.विहार, माखनचोरी आदि अनगिनत प्रसंगों के माध्यम से ग्रामीण जीवन के मनोरम दृश्यों से हमारा परिचय कराया है।

गोचारण केवल हिन्दी साहित्य की ही परंपरा है , ऐसा नही है । मनुष्य जाति की अत्यंत प्राचीन वृत्ति होने के नाते अनेक देशों मे वह काव्य का प्रिय विषय रहा है। यवन दे श (यूनान) के पशु

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चारण काव्य; का मधुर संस्कार यूरोप की कविता पर गहरा है। इसी कारण वह अभी तक भी उससे अंशत: प्रभावित है। कवियों को आकर्षित करने वाली गोपजीवन की सबसे बडी वि शेषता है , प्रकृति के विस्तृत क्षेत्र मे विचरने के लिए सबसे अधिक अवकाश।

सूर साहित्य में ग्रामीण जीवन

सूरदास ने इस गोचारण का आश्रय लेकर ग्रामीण जीवन के विहंगम और रमणीय दृश्यों का विधान किया है। यथा -

मैया री ! मोही दाऊ टेरत।
मोको वनफल टोरि देते हैं आपुन गैयन घेरत।

यमुना के तट पर किसी बडे पेड़ की शीतल छाया में बैठकर कभी सब सखा कलेऊ बॉटकर खाते हैं। कभी इधर-उधर दौडते हैं, कभी कोई चिल्लाता है-

"द्रुम चढि काहे न टेरत कान्हा गैया दूर गई
धाई पनात सबन के आगे जे वृषभान दई।"

ऐसे दृश्यों के वर्णन से कोई भी सहृदय ग्रामों की ओर आकर्षित हो सकता है और इसे ग्रामीण जीवन से पलायन की समस्या के निवारण के रूप मे भी देखा जा सकता है। वृंदावन के उसी सुखमय ग्रामीण जीवन के हास-परिहास के बीच गोपियों व राधा-कृष्ण के प्रेम का उदय होता है। नित्य अपने बीच चलते- फिरते , गाय चराते , माखन चुराते गोपियाँ कृष्ण में अनुरक्त होती हैं और कृष्ण गोपियों में।

ग्रामीण जीवन के जाने कितने इंद्रधनुषी रंग हमें वृंदावन के क रील कुंजों, लोनी लताओं, हरे-भरे कछारों, खिली हुई चांदनी, कोकिल-कुंजन आदि में देखे जा सकते हैं। वृंदावन में कृष्ण का संपूर्ण जीवन क्रीडामय है। गोचारण व गोदोहन के एक नहीं न जाने कितने सजीव चित्र सूरदास ने खड़े किए हैं।

"करि लियो न्यारी हरि आपनि गैयाँ।'' एवं
"तुम पै कौन दुहाबै गैया ।"
इत चितवत उत धार चलावत , एहि सिखायो है मैया"

राधा और कृष्ण का गाय चराते समय वन में भी साथ हो जाता है, एक दूसरे के घर भी आने-जाने लगे हैं। इसलिए क्रीडामय ग्रामीण जीवन के न जाने कितने सतरंगी चित्र यहाँ उपस्थित हुए हैं। माखन मथने , दूध दोहने आदि कई ग्रामीण जीवन की क्रियाओं के चित्र सूरसागर में अपनी सहजता के कारण मन मोह लेते है।

संयोग द शा के अतिरिक्त वियोग द शा में भी सूरदास गायों की द शा का वर्णन करना नहीं भूले। 'भ्रमर गीत' प्रसंग मे जब गोपियों अपनी दशा का वर्णन करते-करते थक गई तब वे गायों का दुख सुनाने लगी कि कदाचित उन्हीं का ख्याल कर कृष्ण एक बार यहाँ आ जाएँ-

"अति कृसगात भई है , तुम बिन परम दुखारी गाए'' एवं
"मानो सूर कारि ढारि है वारि मध्य तें मीन।''

तुलसीदास ने भी 'मानस' एंव अन्य कृतियो मे ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है 'मानस' का राम-वन-गमन प्रसंग तो पूरा ग्रामीण जीवन से भरा पडा है , परंतु ग्रामीण जीवन के सबसे आह्लादक चित्र सूरदास ने प्रस्तुत किए हैं। परवर्ती काव्य में पद्माकर, बिहारी, केशवदास व अन्य कवियों के काव्य में भी ग्रामीण जीवन के बिंब दिखाई देते हैं। पद्माकर के फाग-वर्णन तो पूरे हिंदी साहित्य मे अद्वितीय हैं जो कि ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग हैं।

साहित्य रचना में ग्रामीण जीवन की जो अजस्त्र धारा वैदिक काल से प्रवाहित हुई वह आदिकाल , मध्यकाल से होती हुई आधुनिक काल तक

अबाध गति से प्रवाहित हो रही है । सूर ने सूरसागर में ग्रामीण जीवन का सुंदर चित्रण कर इस धारा को अधिक प्रवाह प्रदान किया। ग्रामीण जीवन का अंकन साहित्य रचना का एक अनिवार्य अंग हैं आधुनिक काल के भी साहित्यककारों ने इस कथन को चरितार्थ किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 छायावादी काव्य का व्यावहारिक सौंदर्य शास्त्र, सूर्य प्रसाद दीक्षित

2 भ्रमरगीत सार, सं रामचंद्र शुक्ल

3 बीसवीं शताब्दी के चर्चित उपन्यास , डॉ राजेन्द्र मिश्र, प्रहलाद तिवारी

4 सूर-साहित्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी

5 सूर सागर सार सटीक, सं धीरेन्द्र वर्मा